

स. श्रो. वि/सोनीपति/ 84/29335.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरगेनो कैमीकल इण्डस्ट्रीज एम-3 इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनोपत के श्रमिक श्री राम राज तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इसलिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विवादों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिगृच्छना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिगृच्छना सं. 3864-ए. एस. श्रो. ई-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है।

क्या श्री राम राज को सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स. श्रो. वि/सोनीपति/ 84/29342.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरगेनो कैमीकल इण्डस्ट्रीज एम-3 इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनोपत के श्रमिक श्री मेघनाथ तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इसलिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विवादों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिगृच्छना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिगृच्छना सं. 3864-ए. एस. श्रो. ई-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है।

क्या श्री मेघनाथ की सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स. श्रो. वि/सोनीपति/ 84/29349.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरगेनो कैमीकल इण्डस्ट्रीज एम-3 इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनोपत के श्रमिक श्री रामपाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इसलिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विवादों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिगृच्छना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिगृच्छना सं. 3864-ए. एस. श्रो. ई-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है।

क्या श्री राम प्रालैब्ली सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस रोहतक का हकदार है?

स. श्रो. वि/सोनीपति/ 84/29356.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरगेनो कैमीकल इण्डस्ट्रीज एम-3 इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनोपत के श्रमिक श्री इंदराज पौडे तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से गुस्संगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री इंदराज पांडे की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि./सोनीपत्त 84/29362.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं श्री आरगैनो कैमोकल इण्डस्ट्रीज, एम-3, इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनीपत्त के श्रमिक धी धर्मवीर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्री चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-श्रम-70/12648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से गुस्संगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री धर्मवीर जी मेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 9 प्रगत्त, 1984

सं. श्रो. वि/एफ.डी./43-84/29523.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कल्च आटो प्रा० लि०, प्लाट नं० 111-112, सेक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री धर्मवीर राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के संबंध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्री चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री धर्मवीर राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि/एफ.डी./43-84/29530.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कल्च आटो लि०, प्लाट नं० 111-112, सेक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री हरिहर राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के संबंध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्री चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री हरिहर राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?